ISSN 2454-2695
Vol 11 Issue 12
December 2025

प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक परम्परा का वर्तमान परिदृष्य : सहरिया जनजाति के विषेष संदर्भ में

आषु अहिरवार
शोधार्थी,
इतिहास विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विष्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
ईमेलः ahirwar.ashu95@gmail.com

सारांष :

प्राचीन भारतीय इतिहास में उपचार की आयुर्वेदिक परम्पराओं से लेकर वर्तमान तक चिकित्सा की अनेक आधुनिक पद्धतियॉ विद्मान है। चूंकि भारत देष विविधताओं से परिपूर्ण देष है। इसलिए इस देष की अनेक जनजातियों के रहन–सहन, रीति–रिवाज, भाषा पद्धति, एवं चिकित्सीय प्रणाली आदि। गौण्ड, भील, बैगा, मीना, (मध्य भारत) मुण्डा, संथाल, गारो, खासी, (उत्तर–पूर्वी भारत), जारवा , सेंटलीज, शोम्पेन (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) एवं टोडा (दक्षिण भारत) पायी जाने वाली महत्वपूर्ण जनजातिया हैं, जो वर्तमान में भी हमारी प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सीय परम्परा की वाहक है। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण जनजाति जिसका अस्तित्व खतरे में दिखलाई पड़ता है, मध्य प्रदेष के उत्तरी क्षेत्र (ग्वालियर, भिण्ड, षिवपुरी, ष्योपुर, गुना, मुरैना) आदि में पायी जाती है।

सहरिया जनजाति प्राचीन काल से ही चिकित्सा की आयुर्वेदिक परम्परा को परिलक्षित करती आयी है। वर्तमान परिदृष्य में भारत सरकार की अनेक संस्थाओं के माध्यम से इस जनजाति को मुख्यधारा में लाने के महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं।

Received on 3 December 2025
Revised on 20 December 2025
Published on 24 December 2025
DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.18047137

ISSN 2454-2695
Vol 11 Issue 12
December 2025

पृष्ठभूमि :

मध्यप्रदेष में जनजातियों की विविधता प्राचीन काल से ही पायी जाती है। जहां समस्त भारत की सर्वाधिक जनजातियाँ निवास करती हैं। आधुनिकता के कारण अनेक जनजातियों ने अपने परिदृष्य को मुख्यधारा में जोड़ने के साथ साथ जागरूकता को अपनाया तथा प्रगतिषील अवस्था में पहुँच रही है। परन्तु वर्तमान में कुछ जनजातियाँ आज भी ऐसी है, जो बहुत अधिक पिछड़ी हुई हैं। मध्यप्रदेष में 03 ऐसी पिछड़ी जनजातियाँ हैं जो, विषेष पिछड़ी श्रेणी के अंतर्गत आती हैं। पहली, भारिया जो कि मध्यप्रदेष के दक्षिणी हिस्से में पायी जाती है। दूसरी, बैगा जो कि मध्यप्रदेष के दक्षिण–पूर्वी हिस्से में पायी जाती हैं और तीसरी,सहरिया जो कि मध्यप्रदेष के उत्तरी हिस्से में पायी जाती है। मध्यप्रदेष शासन द्वारा विषेष पिछड़ी जनजाति विकास प्राधिकरणों की स्थापना की गई है, जिसके अंतर्गत सहरिया जनजाति को विषेष संरक्षित सुरक्षा प्रदान की जा रही है। ये जनजाति प्रारंभ से ही उपचार के लिए आयुर्वेदिक पद्वति का अनुषरण करते आये हैं। इस पद्वति से उन्होंने अनेक प्राण द्यातक रोगों का उपचार किया है। चूकि यह जनजाति जल जंगल और जमीन से जुड़ी है इसलिए उन्होंने चिकित्सा की प्राचीन पद्वति को अपनाया है। अनेक शोधकर्ता इनकी जड़ी बूटियों वाली चिकित्सा पद्वति पर शोध कार्य कर रहे है जो कि वर्तमान में नवीन आयामें को नई दिषा प्रदान करेगी।

बीज शब्द : सहरिया, आयुर्वेदिक, जनजाति, ग्वालियर–चम्बल क्षेत्र

शोध अध्ययन क्षेत्र :

म.प्र. के ग्वालियर–चम्बल संभाग के भौगोलिक क्षेत्र में पायी जाने वाली सहरिया जनजाति।

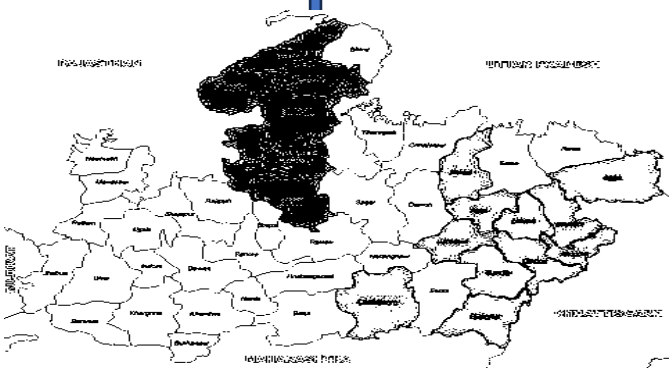

चूंकि सहरिया जनजाति भारत के विभिन्न हिस्सों में पायी जाती है और इनके स्वरूप में प्रत्येक जगह पर व्यवहार में विविधता देखी जा सकती है। मेरे शोध पत्र ''**प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक परम्परा का वर्तमान परिदृष्य : सहरिया जनजाति के विषेष संदर्भ में**'' का अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेष के ग्वालियर–चम्बल संभाग का भौगोलिक क्षेत्र है इसलिए यह शोध पत्र मध्यप्रदेष के उत्तरी क्षेत्र में पायी जाने वाली सहरिया [1] जनजाति से संबधित है।

वर्तमान परिदृष्य की दृष्टि से **ग्वालियर संभाग** मध्यप्रदेष राज्य के उत्तर में स्थित है। इस संभाग में स्थित पांच जिले **ग्वालियर ,शिवपुरी, गुना, दतिया और अशोकनगर** शामिल है। इस संभाग में कुल 34 तहसील एवं 24 जंनपद पंचायत है। राजनैतिक दृष्टि से यह संभाग 2 लोकसभा संसदीय क्षेत्र ग्वालियर एवं गुना तथा 20 विधानसभा क्षेत्रो में विभाजित है। संभाग का मुख्यालय ग्वालियर शहर स्थित मोती महल भवन मे स्थित है, जो रेल्वे स्टेशन से मात्र 1 कि.मी. की दूरी पर है।[2]

वहीं **चंबल संभाग** मध्य प्रदेश की चंबल घाटी का एक हिस्सा है। मध्य प्रदेश के तीन जिलें **भिण्ड, मुरैना और श्योपुर** चंबल संभाग के अंतर्गत आते हैं। चंबल नदी इस क्षेत्र को राजस्थान और उत्तर प्रदेश से अलग करती है। इस प्रकार यह विभाजन की उत्तरी, उत्तर.पश्चिमी और उत्तर.पूर्वी सीमाओं को परिभाषित करती है। चंबल नदी के दूसरी तरफ यानी चंबल संभाग के उत्तर में कोटा, सवाई माधोपुर, करौली, राजस्थान और आगरा, उत्तर प्रदेश के इटावा जिले और पश्चिम में पार्वती नदी इसकी सीमा को परिभाषित करती है। मध्य प्रदेश के शिवपुरी, ग्वालियर जिले दक्षिण में सीमा बनाते हैं। पूर्व में दतिया जिले और उत्तर प्रदेश का जालौन जिला इसकी सीमा है।[3]

Received on 3 December 2025
Revised on 20 December 2025
Published on 24 December 2025
DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.18047137

ISSN 2454-2695
Vol 11 Issue 12
December 2025

शोध पत्र की साहित्य समीक्षाः

लिखित साहित्य का अभाव :

ऐतिहासिक रूप से शिक्षा की कमी और आर्थिक विपन्नता के कारण सहरिया जनजाति में लिखित साहित्य का विकास बहुत कम हुआ है, जो कि वर्तमान समय में शोध का विषय है। लेकिन अब अनेक साहित्यकार एवं इतिहासकार आदि इस विषय पर शोध कार्य के माध्यम से महत्वपूर्ण बिंदुओं को प्रकाष में लाने का प्रयास कर रहे है।

लोक नृत्य और गीत : इस जनजाति में नृत्य (जैसे सहरिया स्वांग, धुलधुल घोड़ी, लहंगी, शिकारी) और गीत उनकी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। ये अक्सर त्योहारों (होली, दीपावली), शादियों और अन्य सामाजिक अवसरों पर प्रस्तुत किए जाते हैं। इन गीतों के माध्यम से उनकी खुशी, दुख और दैनिक जीवन का चित्रण होता है जो कि हमारे लिए मनोरंजन का विषय भी रहता है।

भाषा–बोली : यह जनजाति की मुख्यरूप से सहरिया बोली का प्रयोग करते हैं, जो हिंदी और राजस्थानी भाषाओं से प्रभावित है, और यह बोली ही नही बल्कि मौखिक साहित्य का माध्यम है।

लोक कथाएँ : सहरिया जनजाति की लोक कथाऐं एवं कहानियाँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुनाई जाती हैं, जिनमें उनके जीवन–दर्शन, जंगल से रिश्ते, देवी–देवताओं (जैसे कारस देव, भूमिया देव, हीरामन देव) और पूर्वजों आदि की स्मृतियों को शामिल किया जाता हैं।

शोधकर्ताओं के कार्य : सहरिया समुदाय के बारे में जो कुछ भी लिखित रूप में उपलब्ध है, वह मुख्य रूप से मानवविज्ञानी, समाजशास्त्रियों और सरकारी शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों, मोनोग्राफों और शोध पत्रों के रूप में है। आधुनिकीकरण और शिक्षा के प्रसार के साथ, अब कुछ शिक्षित सहरिया युवा और शोधकर्ता अपने समुदाय के इतिहास, समस्याओं और संस्कृति पर लिख रहे हैं। ये कार्य अक्सर पत्रिकाओं या पुस्तकों में प्रकाशित होते हैं। अतः संक्षेप में, सहरिया साहित्य मुख्य रूप से मौखिक, जीवंत और सामुदायिक है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखता है।

उद्देष्यः

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत सहरिया जनजाति पर शोध पत्र ''**प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक परम्परा का वर्तमान परिदृष्य : सहरिया जनजाति के विषेष संदर्भ में**'' लिखने के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार है।

ऐतिहासिक संस्कृति और आयुर्वेदिक चिकित्सीय परम्परा अध्ययन : सहरिया जनजाति की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उनकी अनूठी संस्कृति, परंपराओं, रीति–रिवाजों और लोक कलाओं का दस्तावेजीकरण और विश्लेषण करना। तथा इनके द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली आयुर्वेदिक चिकित्सीय परंपरा का अवलोकन कर वर्तमान में वैज्ञानिक विष्लेषण करना।

मानव विकास संकेतकों की पहचान : सहरिया जनजाति के स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर से जुड़े मानव विकास संकेतकों पर ध्यान केंद्रित करना, ताकि उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ सके।

समस्याओं और चुनौतियों की पहचान : इस जनजाति के सामने आने वाली गंभीर समस्याओं, जैसे कि जल, जंगल और जमीन से संबंधित शोषण, आधुनिक समाज के साथ सामंजस्य की कमी, और आजीविका के लिए संघर्ष की पहचान करना।

संरक्षण और नीति सुझाव : भारतीय इतिहास के पन्नों से गायब इस समुदाय के संरक्षण के लिए प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों का सुझाव देना, ताकि उनके अद्वितीय जीवन शैली और पारंपरिक औषधीय एवं आयुर्वेदिक ज्ञान को बचाया जा सके।

सहरिया जनजाति पर वर्तमान परिदृष्य का प्रभाव : सहरिया जनजाति पर यदि वर्तमान परिदृष्य का प्रभाव पड़ता है तो वह शीघ्र अति शीघ्र समाज की मुख्यधारा से जुड़ेगी।

Received on 3 December 2025
Revised on 20 December 2025
Published on 24 December 2025

DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.18047137

ISSN 2454-2695
Vol 11 Issue 12
December 2025

सहरिया जनजाति का परिचयः

प्राचीन इतिहास से लेकर वर्तमान तक इस जनजाति को अनेक नामों से उल्लेखित किया जाता रहा है। सहरिया जनजाति को मुख्यतः **सहर, सबर, साहोर, सहारा, और शहर** आदि के नाम से जाना जाता है।[4] यह जनजाति मध्यप्रदेष के उत्तरी हिस्से, ग्वालियर संभाग के ग्वालियर, षिवपुरी,गुना, अषोक नगर एवं चम्बल संभाग के भिण्ड, मुरैना एवं श्योपुर जिलों के अंतर्गत निवास करती है। इनके निवास स्थल अनेक प्रकार के बने होते है जैसे–छोटे–छोटे गाँव जिन्हें **'ढाना'**[5] कहते हैं, में रहते हैं। साथ ही इनकी '**सहरना'**[6] नामक अलग बस्ती होती है। चूकि उत्तरी मध्यप्रदेष में हिन्दी एवं ब्रज भाषा बोली जाती है इसलिए यह जनजाति हिंदी और ब्रज भाषा का अनुषरण करती है। यह जनजाति मुख्यतः त्योहारों या बधाई के अवसरों पर पांरम्पारिक रूप से सहरिया, धुलधुल घोड़ी, स्वांग, गैर आदि प्रकार के नृत्य करती है। यह हिन्दु धर्म के त्योंहारो को ही अपनाते है इसके अलावा गोंड देवता, बीजासुर, भवानी जैसे स्थानीय देवी–देवतओं के साथ साथ प्रकृति की पांरम्पिरिक पूजा भी करते है। अतः सीताबाड़ी मेले को 'सहरिया जनजाति का कुंभ' कहते हैं। यह जनजाति पारंपरिक रूप से शिकार, वनोपज संग्रह और कृषि पर निर्भर रहती है, लेकिन वर्तमान में कुपोषण और आर्थिक पिछड़ेपन से जूझ रही है। संक्षेप में, सहरिया जनजाति जंगल से जुड़ी हुई, गहरी सांस्कृतिक परंपराओं वाली, और सरकारी सहायता की आवश्यकता वाली एक पिछड़ी जनजाति है। इस जनजाति को भारत सरकार द्वारा **PVTG** (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह) का दर्जा प्राप्त है।सहरिया जनजाति की प्राचीन चिकित्सीय आयुर्वेदिक पद्धति, अन्य जनजातियों के समान, मुख्य रूप से पारंपरिक भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित औषधीय पौधों, जड़ी बूटियों एवं अनेक प्रकार की वनस्पतियों के मिश्रण से प्राप्त दवाओं के आयुर्वेदिक क्रियाकलाप के माध्यम से गंभीर रोगों का उपचार की पद्वति इस जनजाति की विषेषता है।

7

और साथ ही इस जनजाति में जागरूकता का अभाव भी देखने को मिलता है। इसलिए यह जादू–धार्मिक मान्यताओं पर भी विष्वास करते है। इनके गावों में झाड़ फूंक करके उपचार करने वालों को **'गुनिया'**[8] है या स्थानीय वैद्य (पारंपरिक चिकित्सक) कहा जाता है जो कि इनके समुदाय में वृद्ध होते है और इन्हीं के द्वारा इस समुदाय को संचालित किया जाता है।

सहरिया लोगों को अपने पूर्वजों से विरासत में मिली वनस्पतियों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त है। वे सामान्य बीमारियों जैसे खांसी, जुकाम, अस्थमा, पेट की समस्याओं, त्वचा रोगों और मधुमेह के इलाज के लिए स्थानीय पौधों की पत्तियों, जड़ों, फलों और छालों का आयुर्वेदिक परंपरा से उपयोग करके पीड़ित का उपचार करते हैं। पारंपरिक चिकित्सा में जानवरों और जानवरों से प्राप्त उत्पादों का भी उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, खांसी और अस्थमा के इलाज के लिए केकड़े की राख का उपयोग किया जाता है, और कुछ जानवरों के अंगों का उपयोग मांसपेशियों के दर्द या घावों पर लगाने के लिए किया जाता है।

•

इस समुदाय में सामान्यतः बीमारियों को अक्सर बुरी आत्माओं या देवी–देवताओं की नाराजगी का परिणाम माना जाता है। प्रमुख महत्वपूर्ण देवी देवता जो कि भिन्न भिन्न कार्यो को सम्पन्न करने के लिए माने जाते है। निम्नलिखित है।

कारस देव और हीरामन देव : ये देवता सर्प या बिच्छू के जहर को उतारने वाले माने जाते हैं।
बीजासेन माता : बच्चों की रक्षा करने वाली और कष्टों को दूर करने वाली माता मानी जाती हैं।
भूमिया देव : इन्हें ग्राम रक्षक देवता माना जाता है, जिनकी पूजा से बीमारी गांव में नहीं आती है।[9]

Received on 3 December 2025
Revised on 20 December 2025
Published on 24 December 2025
DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.18047137

ISSN 2454-2695
Vol 11 Issue 12
December 2025

सहरिया जनजाति में उपचार की प्राचीन आयुर्वेदिक परम्परा :

जहां आधुनिक विष्व में चिकित्सीय विज्ञान अपने चरम स्तर पर सभी के लिए जीवन दायक बन रहा है वहीं हमारी प्राचनी भारतीय ज्ञान परंपरा में पहले से ही अनेक गंभीर रोगों के उपचार की विधियों का वर्णन किया गया है। प्राचीन भारतीय ऋषिजन प्रारंभ से ही हमारी भारतीय आयुर्वेदिक ज्ञान परंपरा के वाहक रहे है। उन्हीं से जनजातीय समुदाय ने इस परंपरा को आगे की ओर बढ़ाया है। वनस्पतियों का व्यापक ज्ञान सहरिया समुदाय को अपने पुरखों से विरासत में मिला है। इन्हें प्राकृतिक रूप से उगने वाले कंद–मूल, फल और औषधीय पत्तियों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त है, वे स्थानीय पौधों का उपयोग करके विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए पारंपरिक दवाइयाँ बनाते हैं। अपने इलाज के लिए वे न केवल पौधों पर निर्भर हैं, बल्कि वे कुछ पशु–आधारित उत्पादों का भी लोक चिकित्सा में उपयोग करते हैं जिसे जोओथेरेपी कहा जाता है। इस ज्ञान का उपयोग खांसी, अस्थमा, टीबी, लकवा, कान का दर्द, मांसपेशियों में दर्द आदि जैसी बीमारियों के लिए किया जाता है। इस जनजाति का मानना है कि कुछ बीमारियाँ अलौकिक शक्तियों या बुरी आत्माओं के कारण होती हैं। इसलिए, उपचार में अक्सर औषधीय उपायों के साथ–साथ आध्यात्मिक अनुष्ठान, मंत्रोच्चारण और देवताओं का आह्वान भी शामिल होता है, ताकि आध्यात्मिक संतुलन बहाल हो सके और यही भी भारतीय ज्ञान परंपरा का ही एक स्वरूप है।

10

यह समुदाय आधुनिक स्वास्थ्य सेवा से दूरी पारंपरिक तरीकों पर निर्भरता और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी के कारण, वे अक्सर डॉक्टरों की मदद लेने से बचते हैं और अपनी पारंपरिक आयुर्वेदिक विधियों को ही प्राथमिकता देते हैं। सहरिया जनजाति की आयुर्वेदिक परंपरा उनके स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के गहरे ज्ञान और सांस्कृतिक मान्यताओं का एक अनूठा मिश्रण है, जो आधुनिक विज्ञान के स्थान पर पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं पर आधारित है। सहरिया जनजाति, जिन्हें 'वनवासी' भी कहा जाता है, यह समुदाय पर्यावरण के साथ गहरे संबंध के माध्यम से प्राप्त जैव–सांस्कृतिक ज्ञान को पीढ़ियों से संरक्षित करता आया है। यह चिकित्सा परंपरा मुख्यतः आयुर्वेदिक और मौखिक परंपराओं के प्रयोगों के माध्यम से संप्रेषित होती रही है। सहरिया जनजाती समुदाय द्वारा प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख औषधीय पौधों और उनके पारंपरिक आयुर्वेदीय ज्ञान को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

तुलसी, शहद, अदरक : नमक, काली मिर्च की चाय सामान्य संक्रमणों में प्रमुख घरेलू उपचार।
सरसों का तेल: बच्चों की नाभि पर मालिश करके सर्दियों में सर्दी से बचाव हेतु।
रयोंझा : इस पौधे का गोंद महिलाओं के प्रसव के 15 दिनों तक टॉनिक के रूप में दिया जाता है।
सियोनला : इन फूलों से प्राप्त गोंद बवासीर के उपचार में के रूप में किया जाता है।
मोर्शिखा : बच्चों के निमोनिया और सांस की तकलीफ में उपयोगी।
मगवा–मुसरी : निमोनिया, बुखार और सर्दी के इलाज में प्रयुक्त।
पाथर–चट्टा : पेट दर्द, पेचिश, दंत रोग और मासिक धर्म के उपचार में प्रयुक्त औषधी।
कसाई : मसूढ़ों और दांतों के दर्द में गरारे हेतु प्रयोग।
अमलतास : पशुओं की बीमारियों और आंखों की समस्याओं में।
नींबू, बेल का रस : छोटे बच्चों के पेट दर्द पेचिस एवं दस्त के उपचार में प्रयुक्त औषधी।
जयफल, केसर, लौंग : बच्चों व खदानों में काम करने वाले वयस्कों में सांस की बीमारियों में प्रयोग।

सहरिया जनजाति और वर्तमान परिदृष्य :

मध्यप्रदेष के उत्तरी क्षेत्र में पायी जाने वाली यह विषेष पिछड़ी जनजाति वर्तमान में समाज की मुख्यधारा से शनैः शनैः जुड़ रही है। भारत सरकार द्वारा इनके लिए अनेक योजनाऐं लाईं जा रही है। साथ ही यह वर्तमान में चिकित्सा

Received on 3 December 2025
Revised on 20 December 2025
Published on 24 December 2025

DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.18047137

ISSN 2454-2695
Vol 11 Issue 12
December 2025

की पारंपरिक आयुर्वेदिक पद्वति के साथ साथ आधुनिक पद्वति का भी अनुषरण करने का प्रयास कर रहे है। षिक्षा, स्वास्थ्य एवं आजीविका के प्रति जागरूकता की ओर अग्रसर है। घरेलु उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को बाजार में लाने के लिए सरकार द्वारा ऋण की सुविधा भी उपलब्ध करायी जा रही है। संक्षेप में यदि कहा जाऐ तो वर्तमान में इस समुदाय को जागरूक होने की और अधिक आवष्यकता है। सहरिया जनजाति की अनेक क्रियाकलापों को ध्यान में रखते हुऐ सरकार को समय समय पर जागरूकता अभियान, राजनीतिक स्थिति, शैक्षणिक संगोष्ठियों, एन. जी. ओ. आदि माध्यमों से समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रबल प्रयास करना चाहिए।

उपसंहार :

जगंल का जादू हम आदिवासियों के आंखों में है, इसका प्रेम भरा गीत, सबके दिलों को छू जाता है। इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि भारत की प्रत्येक जनजाति की अमरगाथा जंगल से प्रारंभ होकर जंगल पर ही अंत होती है। हमारे पर्यावरण के वास्तिविक संरक्षक यह जनजातीय समुदाय ही है जो हमें अनेक प्राकृतिक आपदाओं संरक्षित किऐ हुऐ है। इनके गीत और संस्कृति समाज के प्रत्येक दिलों में घर बनाऐ हुऐ है। सहरिया जनजातीय समुदाय सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि स्थिति को सुधारने के लिए प्रयासरत् है। परंतु उनकी प्राचीन आयुर्वेदिक परंपरा वर्तमान में समस्त समुदाय की विषेषता का केन्द्र बनी हुई है, जो समाज के अन्य वर्गों के लिए भी लाभदायक सिद्व हुई है। मानव उपचार हेतु पारंपरिक व्यवस्था के साथ साथ इन्हें आधुनिक वैज्ञानिक पद्वति का भी उपयोग करना चाहिए।

संदर्भ :

1. शोधार्थी द्वारा स्वयं डिजाईन किया हुआ। दिनांक 10.11.2025
2- https://gwaliordivisionmp.nic.in/ दिनांक 15.11.2025 को प्राप्त।
3- https://chambaldivisionmp.nic.in/ दिनांक 15.11.2025 को प्राप्त।
4- भिरोरिया, प्रभा, 'मध्यप्रदेष में सहरिया जनजाति को विषेष संरक्षण'(षोध पत्र), वोल्युम 11.
5- शर्मा, हरिओम, सिकंदरार, आर.एल.एस.,मध्य प्रदेश की सहरिया जनजाति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, स्वरूप एंड संस प्रकाशन, 2001,नई दिल्ली.
6- पूर्वोक्त।
7- https://mainbhibharat.co.in/wp-content/uploads/2021/05/Sahariya-2.jpg दिनांक 20.11.2025 को प्राप्त।
8- पांडे, एस.के., सहरियाः चंबल की एक पिछड़ी जनजाति, मध्य प्रदेश संदेश अगस्त, भोपाल,1988, ।
9. शंकर, वी., सहरिया समाज एवं संस्कृति, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2014।
10- https://mainbhibharat.co.in/wp-content/uploads/2021/04/TRIBAL-HEALER-1.jpg दिनांक 30.12.2025 को प्राप्त।

Received on 3 December 2025
Revised on 20 December 2025
Published on 24 December 2025
DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.18047137